

वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सुरत
एम.फिल. / पीएच. डी. हिन्दी प्रवेश परीक्षा का अभ्यासक्रम
Syllabus for M.Phil.&Ph.D. (Hindi) ENTRANCE TEST

20/10/2020

100 गुण

(A) Subjective (50)

ईकाई-1 हिंदी साहित्य का इतिहास :

1. अपभ्रंशः अर्थ और स्वरूप, अपभ्रंश और हिंदी काव्य का संबंध , आदिकाव्य की साहित्यिक प्रवृत्तियाँ एवं शिल्पगत विशेषताएँ, काव्यरूप एवम् भाषा। आदिकाल-नामकरण, मुख्य विशेषताएँ, सिद्ध-नाथ-जैन साहित्य-प्रमुख रचनाएँ ।
2. भक्तिकाल- भक्तिः परिभाषा-स्वरूप-विकास-भक्तिकालीन युगीन परिस्थितियाँ-संत-काव्य, सूफी-काव्य, राम तथा कृष्ण काव्य का विस्तृत परिचय-भक्तिकालीन विशेषताएँ।
3. रीतिकाल-नामकरण, युगीन परिस्थितियाँ, रीतिकाल की काव्यधाराओं की विशेषताएँ तथा प्रमुख कवियों का साहित्यिक परिचय ।
4. आधुनिक युग-युगीन परिस्थितियाँ, आधुनिकयुग का काल-विभाजन, भारतेन्दु, द्विवेदी, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद तथा नयी कविता के प्रमुख कवि और विशेषताएँ। कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, आलोचना का उद्भव और विकास तथा प्रमुख लेखकों का परिचय।

ईकाई-2 काव्य शास्त्र एवम् साहित्यालोचन :

1. रस-संप्रदाय, रीति-संप्रदाय, वक्रोक्ति संप्रदाय, ध्वनि संप्रदाय , अलंकार संप्रदाय एवम् औचित्य संप्रदाय ।
2. प्लेटो, अरस्तू , लॉजाइनस , वड्सवर्थ , ड्राइडन, कॉलरिज, मैथ्यू आर्नल्ड, टी.एस.इलियट, आई.ए. रिचर्ड्स ।
3. सिद्धांत और वाद , मार्क्सवाद , अभिव्यंजनावाद , स्वच्छंदतावाद , आभिजात्यवाद : मनोविक्षेपणवाद तथा अस्तित्ववाद सामान्य परिचय एवं विशेषताएँ।
4. आधुनिक समीक्षा की विशिष्ट प्रवृत्तियाँ : संरचनावाद विखंडनवाद , शैलीविज्ञान , उत्तर आधुनिकतावाद- सामान्य परिचय एवं विशेषताएँ।

ईकाई-3 हिंदी भाषा एवम् भाषा-विज्ञान

1. प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ मध्यकालीन भारतीय , वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और उनकी विशेषताएँ- आर्यभाषाएँ आधुनिक , मागधी अपभ्रंश और उनकी विशेषताएँ , अर्धमागधी , शौरसेनी-प्राकृत , पालि - भारतीय आर्यभाषाएँ और उनका वर्गीकरण।
2. हिंदी का भौगोलिक विस्तार बिहारी तथा , राजस्थानी , पूर्वी हिंदी , पश्चिमी हिंदी , उपभाषाएँ हिंदी की- पहाडी और उनकी बोलियाँ ब्रज और अवधी की विशेषताएँ , खड़ीबोली . देवनागरी लिपि विशेषताएँ- और मानकीकरण।
3. हिन्दी के विभिन्न रूपः मातृभाषा, सर्जनात्मक भाषा, माध्यम भाषा, संचार भाषा, राज भाषा का परिचय । पारिभाषिक शब्दावलीनिर्माण के सिद्धांत। -पारिभाषिक शब्दावली , स्वरूप एवम् महत्व -

4. अनुवाद : सिद्धांत एवम् व्यवहार - अनुवाद का स्वरूप , प्रक्रिया एवम् प्रविधि , क्षेत्र , हिंदी की प्रयोजनीयता में अनुवाद की भूमिका , समाचार , कला-लेखन- संपादन के आधारभूत तत्व , व्यावहारिक प्रूफ शोधन ।

ईकाई-4 हिंदी व्याकरण, भारतीय साहित्य और लोक साहित्य :

1. हिंदी व्याकरण-शब्दभेद, स्वर-व्यंजन, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, कारक, लिंग एवम् वचन आदि का सोदाहरण व्याख्या सहित परिचय ।
2. भारतीय साहित्य का स्वरूप, भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ, भारतीयता का समाजशास्त्र। भारतीय साहित्य में आज के भारत का बिंब, हिंदी साहित्य में भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति।
3. लोक-साहित्य के प्रमुख रूपों का वर्गीकरण: लोक-गीत, लोक-नाट्य, लोक-कथा, लोक-गाथा, लोक-नृत्य-नाट्य, लोक-संगीत।
4. लोक, साहित्य: अवधारणा- संस्कृत वाङ्मय में लोकोन्मुखता, वर्तमान अभिजात साहित्य और लोकसाहित्य का अंतःसंबंध-, लोकसाहित्य का अन्य- सामाजिक विज्ञानों से संबंध, भारत में लोकसाहित्य-के अध्ययन का इतिहास, समस्याएँ।

ईकाई- 5 हिन्दी साहित्य की कालजयी रचनाओं का समीक्षात्मक अध्ययन :

हिन्दी साहित्य के कालजयी गद्य एवं पद्य साहित्य की समीक्षा एवं साहित्यकारों का सामान्य परिचय ।

Research Methodology (50)

1. अनुसंधान का स्वरूप : अनुसंधान शब्द, विभिन्न पर्याय, अर्थ एवम् परिभाषा, अनुसंधान क्या है ? अनुसंधान का महत्त्व , अनुसंधान की उपयोगिता, प्रकृति एवं क्षेत्र, उनकी उपयुक्तता ।
 2. अनुसंधान के प्रकार : साहित्यिक, आलोचनात्मक, काव्यशास्त्रीय, तुलनात्मक , ऐतिहासिक, भाषा - वैज्ञानिक, समाज शास्त्रीय । अनुसंधान और चिंतन : प्रक्रिया, तार्किक और सृजनात्मक चिंतन ।
 3. अनुसंधान के गुण : सत्य की खोज और परिक्षण, चिंतन , तर्क, सहनशीलता, परिश्रमशीलता, कार्यशीलता, विषय का पूर्व ज्ञान और रुचि, त्याज्य गुण और अन्य गुण ।
 4. साहित्यिक अनुसंधान की प्रक्रिया : विषय चयन, सामग्री –संकलन, मौलिक स्रोत, गौण स्रोत, मूल ग्रन्थ, सहायक ग्रन्थ, सर्वेक्षण सामग्री।
 5. विषय परक रुपरेखा बनाने की पद्धति , अर्थ एवं परिभाषा, कामचलाऊ रुपरेखा ,
 6. हिंदी के इतिहास लेखक और उनकी इतिहास दृष्टि , विचारधारा और साहित्य ।
 7. साहित्य का समाज शास्त्र, मनोवैज्ञानिक अध्ययन, सांस्कृतिक अध्ययन, भाषा वैज्ञानिक विवेचन, साहित्य का बोध ।
 8. विश्व प्रसिद्ध एवं भारतीय संशोधनात्मक – प्राचीन एवं मध्यकालीन साहित्य का संशोधन ।
 9. मध्ययुगीन बोध का स्वरूप , आधुनिक बोध, राष्ट्रीयता और अंतर्राष्ट्रीयता , पुनर्जागरण, और हिंदी लोक जागरण ।
 10. भारतीय एवं पाश्चात्य पत्र- पत्रिकाओं और पुरस्कार का हिंदी साहित्य के विकास तथा प्रचार प्रसार में योगदान ।
-

